REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

हरियाणा के कृषि संसाधन में रबी की प्रमुख फसलें (एक भौगोलिक विश्लेषण)

Mrs. Anjana
Assistant Professor, GCW, Sec. 18, Rewari(Haryana).

परिचय :–

हरियाणा राज्य के पश्चिम व दक्षिण में राजस्थान विस्तृत है दक्षिण–पूर्व में केन्द्रशासित प्रदेश दिल्ली है। हरियाणा भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग में पंजाब के मैदान के दक्षिणी भाग में 27^0 39^1 उत्तरी अक्षांश से 30^0 55^1 उत्तरी अक्षांश तथा 74^0 28^1 पूर्वी देशान्तर से 77^0 36^1 पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है हरियाणा राज्य के उत्तर पश्चिम में पंजाब तथा उत्तर–पूर्व में यमुना नदी उत्तर–प्रदेश राज्य की सीमा निर्धारित करती है। वर्तमान में हरियाणा में 22 (बाईस) जिले हैं। चण्डीगढ पंजाब व हरियाणा की सांझी राजधानी होने के साथ–साथ केन्द्रशासित प्रदेश भी है।

कृषि संसाधन :–

कृषि अंग्रजी भाषा के एग्रीकल्चर शब्द का प्रर्याय है जिसकी रचना लेटिन भाषा के दो शब्दों अग्री तथा कल्चर से मिलकर हुई है जिसका अर्थ क्रमशः भूमि (Land of field) तथा देखभाल The care of cultivation हैं। इसका सामान्य अर्थ है भूमि को जोतकर फसल पैदा करना।

(1). रबी की फसल :–

रबी फसल को स्थानीय भाषा में आषाढ की फसल भी कहा जाता है। यह वर्षा काल के बाद अक्टुबर–नवम्बर महीनें में बोई जाती हैं तथा फरवरी मार्च में काट ली जाती है। रबी की फसलों में गेहूँ, जो, चना, गन्ना, तिलहन, सरसो आदि फसलो को शामिल किया जाता है।

तालिका – 1
हरियाणा की प्रमुख रबी फसलों की जिलेवार उत्पादन प्रति□ात (2012–13)

क्र.सं.	जिले	गेहूँ	चना	गन्ना	सरसों
1	अम्बाला	3.49	0.00	10.01	0.25
2	पंचकुला	0.68	0.21	0.50	0.32
3	यमुनानगर	3.41	0.21	26.96	0.54
4	कुरुक्षेत्र	4.51	0.21	9.22	0.36
5	कैथल	6.90	0.21	3.47	0.16

6	करनाल	7.00	0.21	10.51	0.20
7	पानीपत	3.40	0.00	7.04	0.16
8	सोनीपत	5.68	0.00	9.02	0.43
9	रोहतक	4.17	1.28	8.82	2.45
10	झज्जर	3.84	1.28	2.87	6.36
11	फरीदाबाद	1.24	0.00	0.69	0.11
12	पलवल	3.84	0.00	2.87	0.68
13	गुरुग्राम	1.78	0.00	0.10	2.54
14	मेवात	2.87	0.64	0.89	5.16
15	रेवाड़ी	1.79	0.00	0.00	12.07
16	महेन्द्रगढ़	1.72	16.17	0.00	17.30
17	भिवानी	6.50	54.47	2.48	29.09
18	जींद	8.64	0.21	3.37	0.81
19	हिसार	9.27	12.34	0.99	11.11
20	फतेहाबाद	7.52	1.28	0.09	2.13
21	सिरसा	11.75	11.28	0.10	7.77
22	कुल	100	100	100	100

स्त्रोत :– अर्थशास्त्र विभाग एवं हरियाणा सांख्यिकीय विश्लेषण (2013–14)

रबी की फसले –

मुख्य रुप ये हरियाणा में निम्नलिखित रबी की फसलों को उगाया जाता है।

(क). गेहूँ। (ग). गन्ना।

(ख). चना। (घ). सरसों।

(क). गेहूँ :–

हरियाणा में गेहूँ का प्राचीन समय से ही उत्पादन होता रहा है तथा हरियाणा की प्रमुख फसलों में गेहूँ का महत्वपूर्ण स्थान है। वेदो, रामायण एवं महाभारतकालीन साहित्य एवं ऋग्वेद में भी गेहूँ का उल्लेख मिलता है। गेहूँ कि अच्छी फसल की पैदावार हेतु कुछ विशेष भौगोलिक परिस्थितियों का सही होना बहुत आवश्यक है। गेहूँ की भौगोलिक परिस्थितियों में अनेक कारक जिम्मेंदार है जिनका वर्णन इस प्रकार से है –

गेहूँ की खेती :–

गेहूँ मूलतः शीतोषण प्रदेश की फसल है यद्यपि यह अनेक प्रकार की भौगोलिक दशाओं में उगाया जाता है। हरियाणा में यह मुख्यतः रबी की फसल है। हरियाणा प्रदेश में इसे अक्टूबर–नवम्बर महीने में बोया जाता है तथा मार्च–अप्रेल में काट लिया जाता है। बोते समय 10^0 सेल्सियस तापमान व पकते समय 15^0 से 28^0 सेल्सियस तापमान उपयुक्त माना जाता है। गेहूँ के पकते समय उच्च तापमान व चमकीली तेज धुप व स्वच्छ आकाश होना आवश्यक होता है। गेहूँ के बोने के लिए 50 से 75 सेन्टीमीटर वर्षा की आदर्श स्थिति मानी गई है बोते समय भूमि में नमी अवश्य होनी चाहिए ताकी गेहूँ की फसल उग सकेगी यदि फसल काल में दो से तीन बार वर्षा हो जाए तो यह इस फसल के लिए बड़ी लाभप्रद होती है। हरियाणा में लगभग 60 प्रतिशत गेहूँ की फसल सिंचाई द्वारा की जाती है। गेहूँ की फसल के लिए हल्की दोमट मिट्टी, चिकनी मिट्टी, बलुई मिट्टी बड़ी ही उपयुक्त मानी जाती है। गेहूँ के खेत को जोतने, बोने, काटने आदि के कार्यो के लिए श्रम की आवश्यकता होती है हरियाणा में जहाँ अब मानवीय श्रम की अपेक्षा कृषि यन्त्रों का प्रयोग अधिक किया जाने लगा है जो भी कुछ मानवीय श्रम करना पड़ता हैं वो भी बाहरी राज्यों की मजदूरी से कराया जा रहा है।

उत्पादन :–

हरियाणा राज्य मे गेहूँ के कुल उत्पादन जिलेवार प्रतिशत निम्न तालिका के देखने से स्पष्ट हो रहा है।

श्रेणी तालिका – 2
हरियाणा गेहूँ उत्पादन का वितरण प्रति□ात में (2012–13)

श्रेणी	गेहूँ उत्पादन वितरण (प्रतिशत में)	सम्मिलित जिले
सबसे कम	2 से कम	पंचकुला, फरीदाबाद, गुरुग्राम, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़।
कम	2 से 4	अम्बाला, यमुनानगर, पानीपत, झज्जर, पलवल, मेवात।
मध्यम	4 से 6	कुरुक्षेत्र, रोहतक, सोनीपत।
अधिक	6 से 8	कैथल, करनाल, भिवानी, फतेहाबाद।
सबसे अधिक	8 से अधिक	जींद, हिसार, सिरसा।

स्त्रोत :– हरियाणा सांख्यिकीय विश्लेषण पर आधारित आँकडो के आधार पर स्वयं द्वारा परिकल्पित।

हरियाणा में गेहूँ उत्पादन वितरण की उपरोक्त तालिका को देखने से स्पष्ट हो रहा है कि हरियाणा में सबसे कम (2 से कम) गेहूँ उत्पादन पंचकुला, फरीदाबाद, गुरुग्राम, रेवाड़ी व महेन्द्रगढ़ आदि जिलों में पाया जाता है। अम्बाला, यमुनानगर, पानीपत, झज्जर, पलवल व मेवात में कम श्रेणी (2 से 4) प्रतिशत गेहूँ उत्पादन देखने को मिलता है। मध्यम श्रेणी (4 से 6) के अन्तर्गत कुरुक्षेत्र, रोहतक व सोनीपत को शामिल किया गया हैं। अधिक श्रेणी (6 से 8) में कैथल, करनाल, भिवानी, फतेहाबाद आदि जिलों को शामिल किया गया है वहीं सबसे अधिक गेहूँ उत्पादन (8 से अधिक) जींद, हिसार व सिरसा जिलों में पाया जाता है। इसका प्रमुख कारण हरियाणा के इन जिलों में कृषि विज्ञान केन्द्रों की स्थापना होना एवं कृषि अनुसंधान केन्द्रो का होना है जहाँ किसानों को फसलों के सन्दर्भ में अच्छी जानकारी मिलती है वहीं अच्छे बीज प्राप्त होते है जिससे यहाँ गेहुँ उत्पादन अन्य जिलों की अपेक्षा अधिक देखने को मिलता है। उपरोक्त तालिका में जहाँ सबसे कम गेहूँ उत्पादन वाले जिले अधिकांश रुप से औद्योगिक, प्रशासनिक व बांगड़ प्रदेश है यही कारण है कि गुरुग्राम, फरीदाबाद जैसे जिलों की अधिकांश जनसंख्या औद्योगिक कार्यो में संलग्न है वहीं पंचकुला एक प्रशासनिक जिला है जहाँ हरियाणा के बड़े प्रशासनिक ऑफिस व कार्य वहीं होते है अतः वहाँ गेहूँ की कृषि शहर के बाहरी हिस्से में होती है वह भी न के बराबर ही होती है या यू कहे की हरियाणा की सबसे कम गेहूँ की कृषि 0.68 प्रतिशत हो पाती है। बांगड़ प्रदेश जिनमें हम महेन्द्रगढ एवं रेवाड़ी के कुछ क्षेत्र को शामिल करते है में उबड़, खाबड़

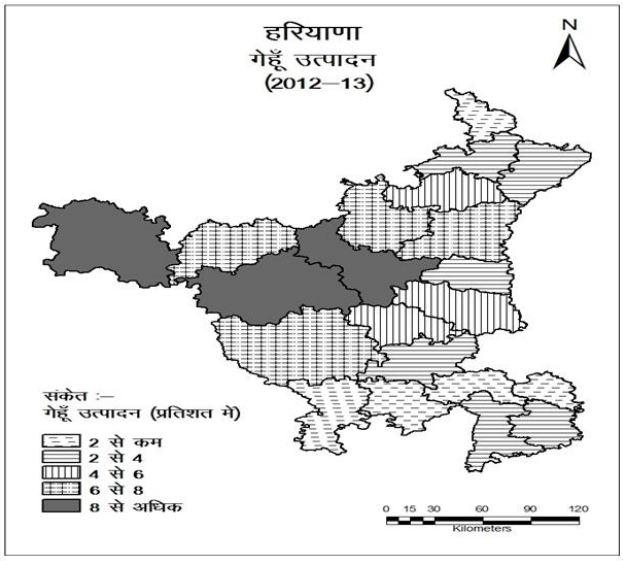

टील्लों की प्रधानता का होना, समय पर बारिस नहीं आना कोई बड़ी नहरे नहीं होना, किसानों का अपनी खेती ट्यूबैल के माध्यम से करना आदि सब कारण हैं कि उपरोक्त जिलों में सबसे कम गेहूँ की खेती हो पाती है। हरियाणा को गेहूँ की 'टोकरी' कहा जाता है चुँकी हरियाणा एक छोटा राज्य है, समतल भूमि है जिसके कारण यहाँ खपत से अधिक गेहूँ का उत्पादन होता है। राज्य अपना अधिकांश गेहूँ केन्द्रीय खाद्यान्न भण्डार को दे देता है। आवश्यकता होने पर राज्य अपना गेहूँ अन्य राज्यों को भी भेज देता है। प्रति हेक्टीयर उत्पादन की दृष्टि से हरियाणा में गेहूँ का उत्पादन भारत के उत्पादन से भी अधिक है।

(ख). चना :–

चना हरियाणा में बांगड़ प्रदेश की फसल हैं जहाँ पर बलुई टील्लों की प्रधानता देखने को मिलती है हरियाणा के दक्षिणी–पश्चिमी के जिलों में ही चने की कृषि अधिक मात्रा में की जाती हैं। हरियाणा के अन्य जिलों में चने की कृषि न के बराबर ही की जाती है। निम्न श्रेणी तालिका से हरियाणा में चने की स्थिति को समझा जा सकता है।

श्रेणी तालिका – 3
हरियाणा में चना उत्पादन वितरण का प्रतिशत (2012–13)

श्रेणी	चना उत्पादन वितरण (प्रतिशत में)	सम्मिलित जिले
कम	1 से कम	पंचकुला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, मेवात, जींद।
मध्यम	1 से 10	रोहतक, झज्जर, फतेहाबाद।
अधिक	10 से 20	महेन्द्रगढ, हिसार, सिरसा।
अत्यधिक	20 से अधिक	भिवानी।

स्त्रोत :– स्टेटिस्टीकल एबस्ट्रेक्ट के आँकड़ों के आधार पर स्वयं द्वारा परिकलित।

उपरोक्त तालिका को देखने से स्पष्ट है कि हरियाणा राज्य में पंचकुला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, मेवात व जींद जिलों में 1 प्रतिशत से भी कम चने का उत्पादन होता है। यहाँ पानी का स्तर काफी ऊँचा पाया जाता हैं नहरों की उपलब्धता हैं, चना अधिक पानी वाले इलाकों में नहीं होता है। मध्यम श्रेणी के अन्तर्गत (1 से 10 प्रतिशत) रोहतक, झज्जर, फतेहाबाद आदि जिलों में चने का क्रमशः 1.28, 1.28, 1.28 प्रतिशत जो समान है पाया जाता है। हरियाणा के दक्षिणी पश्चिम में लगते जिले महेन्द्रगढ़, हिसार व सिरसा में चनों का

प्रतिशत क्रमशः 16.17, 12.34, 11.28 पाया जाता है वहीं हरियाणा में सबसे अधिक चना भिवानी जिले में उत्पन्न किया जाता है जो 54.47 प्रतिशत है हरियाणा की उपरोक्त श्रेणी तालिका में अधिक व अत्याधिक श्रेणी के अन्तर्गत आने वाले जिलों में चना की फसल का अधिक होने का प्रमुख कारण यहाँ की भूमि एवं जलवायविक परिस्थितियाँ हैं जो चने की फसल के लिए बहुत ही उपयोगी है। हरियाणा में अम्बाला, पानीपत, सोनीपत, फरीदाबाद, पलवल, गुरुग्राम, रेवाड़ी

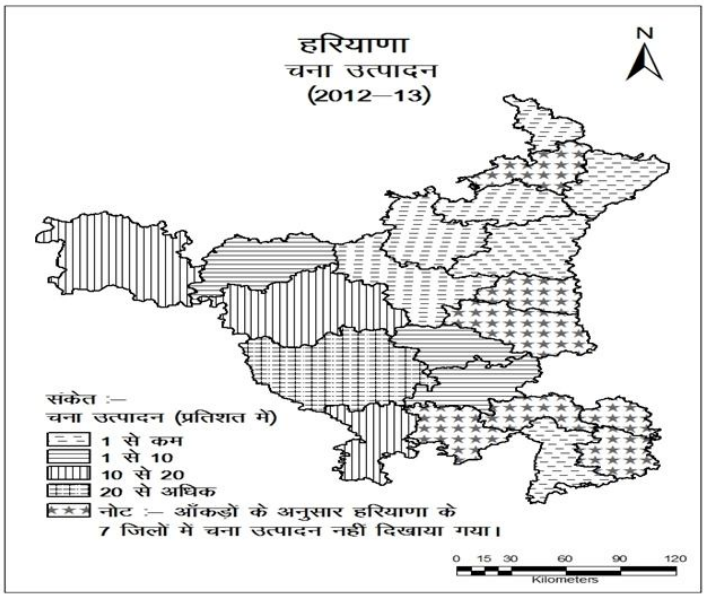

आदि सात जिलों में चने की खेती/फसल नहीं कि जाती अर्थात यहाँ फसल उत्पादन प्रतिशत जीरो (0) है। रेवाड़ी जैसे जिले में चने की खेती पहले काफी होती थी लेकिन अब यह घरेलु खेती तक ही सिमट कर रह गई है यहाँ पर चने की खेती अब किसान के लिए घाटे की सौदा हो गयी है।

(घ). गन्ना :–

भारत को ही गन्ने का जन्म स्थान माना जाता है। यह 'सैकरम आफिसीनेटम' नामक बाँस जैसी वनस्पति का एक वंशज है। जिसके मीठे रस से गुड, चीनी, खाण्ड आदि तैयार किए जाते है। हरियाणा भारत के प्रमुख गन्ना उत्पादक राज्यों में से एक है गन्ने की खोई से कागज तथा गत्ता बनाया जाता है। इसके शीरे से शराब तथा अल्कोहल बनाऐ जाते हैं। उबरी पत्तियाँ तथा कोमल डंठल पशुओं को चारे के रुप में खिलाया जाता है।

गन्ने की खेती :–

गन्ना की फसल लगभग 11 से 12 महीने में तैयार होती है गन्ने के अंकुर निकलने के समय तापमान लगभग 20^0 सेल्सियस होना चाहिए। 16^0 सेल्सियस से तापमान कम होने पर फसल की पैदावार नहीं होती अधिक ठंड एवं पाला गन्ने की फसल के लिए हानिकारक है जहाँ तापमान थोड़ा कम पाया जाता है वहाँ पर गन्ने की फसल देर से तैयार होती है। गन्ने की फसल के लिए 100 से 150 सेन्टीमीटर वार्षिक वर्षा की आवश्यकता पड़ती है। जिन क्षेत्रों में वर्षा कम होती है वहाँ सिंचाई द्वारा फसल ली जाती है। गन्ने की कटाई से पहले शुष्क वातावरण हो तो गन्ने की मिठास अधिक हो जाती है। चूनायुक्त मिट्टी गन्ने की कृषि के लिए बहुत उपयोगी होती हैं। नदी घाटियों के क्षेत्र, बाढ़ मैदानों के क्षेत्र तथा डेल्टाई प्रदेश के क्षेत्रों की मिट्टीयाँ भी गन्ने की कृषि के लिए बहुत लाभदायक होती। मैदानी क्षेत्र गन्ना की कृषि के लिए बहुत ही उपयुक्त होती है क्योंकि कृषि यन्त्रों का उपयोग मैदानी क्षेत्रों में आसानी से किया जा सकता है। गन्नों को चीनी मिलों तक पहुँचाने के लिए सड़क एवं रेलमार्ग द्वारा सुविधाजनक रुप से पहुँचाया जा सकता है। गन्ने की खेती का

अधिकतर कार्य हाथ से ही करना पड़ता है लेकिन आज वर्तमान में गन्ने की खेती का मशीनीकरण हो रहा है जिससे कम मानवीय श्रम से काम चलने लगा है।

उत्पादन :–

हरियाणा में गन्ना उत्पादन वितरण प्रतिशत का जिलेवार अध्ययन निम्न श्रेणी तालिका से स्पष्ट है।

श्रेणी तालिका – 4

हरियाणा मे गन्ना उत्पादन प्रतिशत 2012–13

श्रेणी	गन्ना उत्पादन (प्रतिशत में)	सम्मिलित जिले
कम	1 से कम	पंचकुला, फरीदाबाद, गुरुग्राम, मेवात, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा।
मध्यम	1 से 5	कैथल, झज्जर, पलवल, भिवानी, जींद।
अधिक	5 से 10	कुरुक्षेत्र, पानीपत, सोनीपत, रोहतक।
अत्यधिक	10 से अधिक	अम्बाला, यमुनानगर, करनाल।

स्त्रोत :– सांखिकीय विश्लेषण के आँकडो के आधार पर स्वयं द्वारा परिकलित।

उपरोक्त श्रेणी तालिका के देखने से स्पष्ट है कि हरियाणा में सबसे कम (1 से कम) गन्ना उत्पादक जिले पंचकुला, फरीदाबाद, गुरुग्राम, मेवात, हिसार, फतेहाबाद व सिरसा है जहाँ इनका उत्पादन क्रमशः 0.50, 0. 69, 0.10, 0.89, 0.99, 0.09 प्रतिशत पाया जाता है। मध्यम श्रेणी (1 से 5 प्रतिशत) के अन्तर्गत कैथल, झज्जर, पलवल, भिवानी एवं जींद, आदि जिलों को शामिल किया गया। पानीपत, सोनीपत, कुरुक्षेत्र व रोहतक जिलों में गन्ना उत्पादन वितरण प्रतिशत 5 से 10 (अधिक श्रेणी) में शामिल किया गया है। वहीं सबसे अधिक (10 से अधिक) प्रतिशत गन्ना उत्पादन अम्बाला (10.01) यमुनानगर (29.96) करनाल (10.51) आदि जिलों में पाया जाता हैं इन तीनों ही जिलों में पानी एवं मिट्टी की उपयुक्त परिस्थितियाँ पाई जाती है इसलिए किसान अच्छा गन्ना उपजाता है। हरियाणा में रेवाड़ी व महेन्द्रगढ़ जिलों में गन्ने के लिए उपयुक्त उपज के लिए दशाएँ न होने के कारण गन्ना नहीं उगाया जाता।

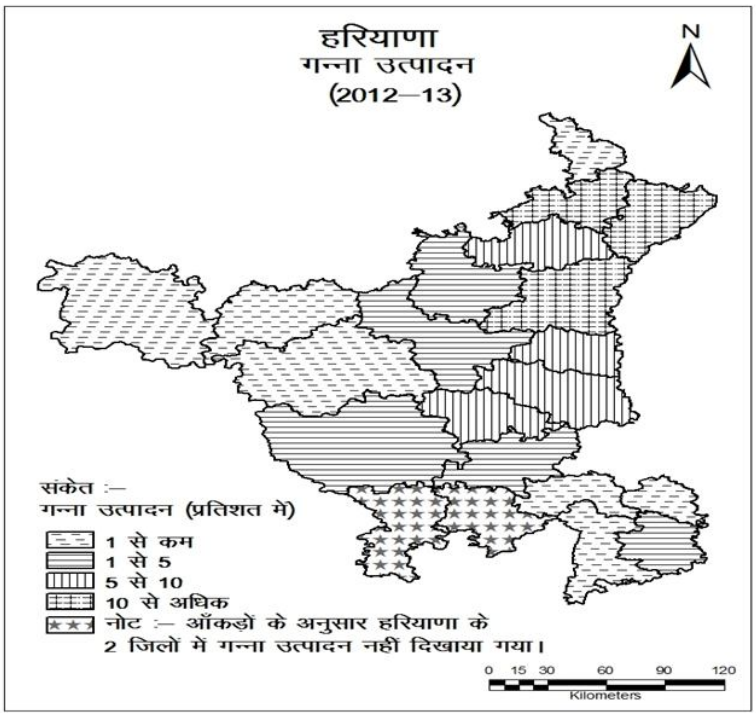

(ड़). सरसों :–

हरियाणा की तिलहन फसलों में सरसों का महत्वपूर्ण स्थान हैं, सरसों से भोजन बनाने का तेल तैयार किया जाता हैं व बची हुई गाद एवं खली को पशुओं को खिलानें के काम में प्रयोग किया जाता हैं इससे पशुओं में दुध देने की क्षमता का विकास होता है।[5] हरियाणा में सरसों के उत्पादन के लिए दक्षिण–पश्चिमी जिले ही अधिक अग्रणीय हैं। सरसों हरियाणा के सभी जिलों में उगाई जाती है। हरियाणा के उत्तरी–पूर्वी जिलों में सरसों का उत्पादन बहुत ही कम देखने को मिलता है निम्न श्रेणी तालिका से हरियाणा में सरसों की स्थिति को समझा जा सकता है।

श्रेणी तालिका – 5
हरियाणा मे सरसों का उत्पादन प्रतिशत में (2012–13)

श्रेणी	सरसो का उत्पादन (प्रतिशत में)	सम्मिलित जिले
कम	1 से कम	अम्बाला, पंचकुला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, पानीपत, सोनीपत, फरीदाबाद, पलवल, जींद।
मध्यम	1 से 10	रोहतक, झज्जर, गुरुग्राम, मेवात, फतेहाबाद, सिरसा।
अधिक	10 से 20	रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हिसार।
अत्यधिक	20 से अधिक	भिवानी।

स्त्रोत :– सांख्यिकीय विश्लेषण ऑकडों के आधार पर स्वयं द्वारा परिकलित।

उपरोक्त तालिका श्रेणी को देखने से स्पष्ट है कि हरियाणा के ग्यारह जिलों अम्बाला, पंचकुला, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र, कैथल, करनाल, पानीपत, सोनीपत, फरीदाबाद, पलवल एवं जींद आदि में सरसों का उत्पादन प्रतिशत 1 से भी कम है। वहीं मध्य श्रेणी (1 से 10) में रोहतक, झज्जर, गुरुग्राम, मेवात, फतेहाबाद व सिरसा जिलों को शामिल किया गया है। हरियाणा में रेवाड़ी महेन्द्रगढ़ व हिसार जिलों में अधिक श्रेणी (10 से 20) में सरसों का उत्पादन किया जाता है। उपरोक्त जिलों का सरसों उत्पादन क्रमशः 12.7, 17.30 एवं 11.11

प्रतिशत है। हरियाणा में सबसे अधिक सरसों का उत्पादन भिवानी जिले में (29.09 प्रतिशत) किया जाता है। हरियाणा में सरसों उत्पादन प्रतिशत में उपरोक्त श्रेणी तालिका में सबसे कम प्रतिशत पाये जाने का कारण कुछ जिलों में उद्योगों की भरमार है तो कुछ जिलों में प्रशासनिक एवं शैक्षिक कार्य हो रहे है जिससे वहाँ पर कृषि कार्य कम किया जाता है अधिकांश व्यक्ति स्थाई व अस्थाई नोकरी में कार्यरत हैं।

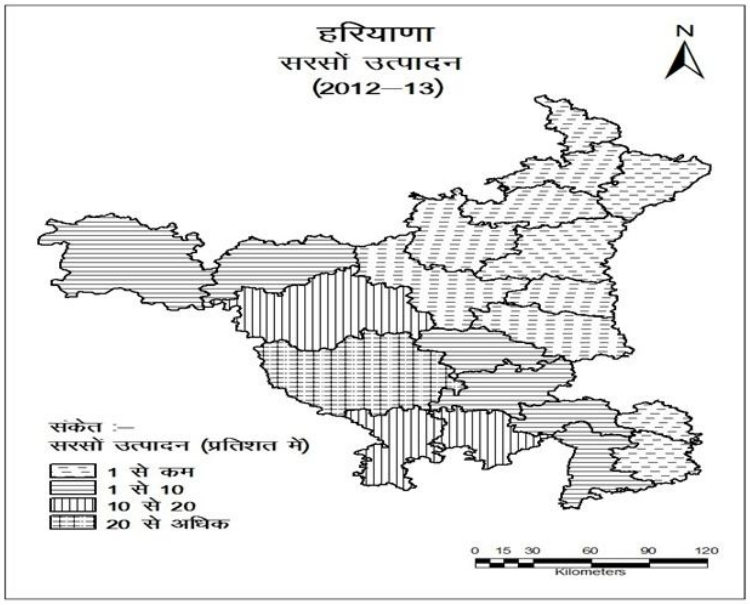

1. बंसल शुरेश चन्द्र (2013) भारत का वृहद भूगोल, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ।
2. हारुन मोहम्मद (2009) संसाधन भूगोल, व सुन्दरा प्रकाशन, गोरखपुर।
3. खुल्लर डी.आर. (2003) भारत का भूगोल एवं प्रयोगात्मक भूगोल, सरस्वती हाऊस (प्रा.) लि. दिल्ली।
4. शर्मा बी.एल., कठमानिया संजय, सिंहल विपिन (2004) हरियाणा एक अध्ययन, प्रतियोगिता साहित्य।
5. गोतम अलका (2007) शारदा पुस्तक भवन, इलाहबाद –2.

Mrs. Anjana
Assistant Professor, GCW, Sec. 18, Rewari(Haryana) .